भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 09 | अंक 19 | उदयपुर मंगलवार 15 अक्टूबर 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मुख को ओट देते कलात्मक मुखौटे

– डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' –

मुखौटा या प्रतिरूप कला विश्व व्यापी रही है। नृत्य, नाटक अथवा अभिनय में मुखौटों का प्रयोग किसी भी पात्र को रचने में सहायक होते हैं और प्रस्तुति को सफलता देते हैं। जनजातीय प्रस्तुति हो या अभिजात्य कला, वेश के साथ मुखौटों का प्रयोग पशु, दानव, असुर, प्रेतादि जैसे अतिकाय या मानवेत्तर पात्रों के रूपांकन में सहायक होते हैं। पिछले दिनों भोपाल में जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी द्वारा मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय में कलाओं में मुखौटे के उपयोग आधारित प्रतिरूप समारोह में प्रदेश के सहित अन्य 10 राज्यों के ऐसे नृत्यों की प्रस्तुतियां हुईं जिनमें मुखौटा का उपयोग किया जाता है। इस संग्रहालय में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय मुखौटा आधारित प्रदर्शनी का संयोजन भी किया गया था। इसमें ऐसे लगभग 100 मुखौटे थे जो भारत सहित नेपाल, भूटान, तिब्बत, बांग्लादेश, फिजी, मलेशिया, श्रीलंका और इंडोनेशिया एवं अन्य देशों के प्रयोग किए जाते रहे हैं।

महाराष्ट्र और केरल के मुखौटे :

महाराष्ट्र में सौंगी मुखौटा एक नृत्य है जो चैत्र पूर्णिमा के अवसर पर देवी पूजन के साथ किया जाता है। सौंगी मुखौटा दो

नर्तक पात्रों द्वारा नरसिंह का मुखौटा धारण किये जाने के आधार पर माना जाता है। काल भैरव एवं वेताल का अभिनय करने वाले

नर्तक भी मुखौटे पहनते हैं तथा अन्य नर्तक हाथों में डंडियाँ लेकर नृत्य करते हैं। इस नृत्य के प्रमुख वाद्यों में ढोल, पंवारी और सम्बल है। पंवारी वादक हरे रंग का वस्त्र धारण करता है तथा पगड़ी मयूर पंख से सुशोभित होती है।

थैय्यम एक केरल का पारम्परिक लोकनृत्य और उत्तरी केरल का भक्ति नृत्य है, जिसमें वर्ष में एक बार 25 से अधिक नृत्यों का प्रदर्शन किया जाता है। प्रति वर्ष अक्टूबर माह में उत्तरी केरल की ओर से फसल कटाई के बाद घरों में थैय्यम नृत्य किया जाता है और भगवान को नृत्य के माध्यम से धन्यवाद ज्ञापित किया जाता है।

गुजरात और ओडिशा के मुखौटे :

गुजरात की डांगी जनजाति के भवाड़ा नृत्य का अर्थ है मुखौटा पहनकर किया जाने वाला नृत्य। इसके साथ एक धार्मिक विश्वास जुड़ा है। किसी के सामने आई बाधा दुःख को दूर करने

के लिए इसे किया जाता है। अखातीज से पहले विभिन्न देवताओं और असुरों के मुखौटे पहनकर भवाड़ा नृत्य किया जाता है। ग्रामीण किसान माताजी की मान्यता मांगते हैं और ग्राम में तीन या पांच साल तक भवाड़ा रखने की मान्यता मांगते हैं। अच्छी फसल और संतान के लिए ग्रामीण भवाड़ा नृत्य आयोजित करते हैं। ऐसी मान्यता डांगी जनजाति में ही नहीं बल्कि पूरे गुजरात में प्रचलित रही है।

ओड़ीशा के लोकनृत्य में जात्रा नामक नृत्य एक लोकप्रिय रूप है। यह कई व्यक्तियों का सामूहिक नाट्य अभिनय है जिसमें संगीत, अभिनय, गायन और नाटकीय वाद-विवाद होता है। यह लोकनाटक बंगाल में भी होता है। धार्मिक रैली एवं अनुष्ठानों में साही जाता नृत्य का प्रदर्शन होता है, जिसमें कोई भी कलाकार श्रीगणेण, नरसिंह और देवी के मुखौटों का उपयोग कर नृत्य में सहभागिता करता है।

हिमाचल और सिक्किम के मुखौटे :

हिमाचल प्रदेश में सिंहटू नृत्य होता है। सिरमौरी बोली में शेर के बच्चे को सिंहटू कहा जाता है। सिंह देवी दुर्गा का वाहन है। सिंहटू नृत्य सिरमौर जनपद के गिरीपार हाटी जनजातीय समुदाय

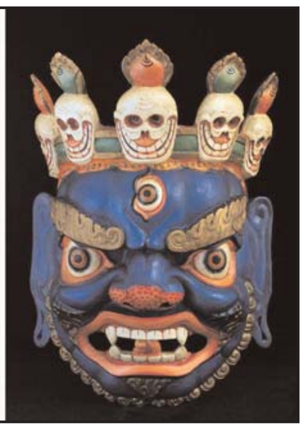

के लोगों का देव परम्परा से जुड़ा एक प्राचीन नृत्य है जिसमें कलाकार लकड़ी, लकड़ी के बुरादे व उड़द के आटे के पारम्परिक तरीके से बनाए गए मुखौटे पहनकर नृत्य करते हैं। इस नृत्य में सिंह, रीछ, राल, बणमाणुश, पोंछी आदि कई प्रकार के मुखौटे धारण किए जाते हैं। सिरमौर जनपद के गिरीपार के हाटी जनजातीय क्षेत्र की इस नृत्य की परम्परा है। उस क्षेत्र के मटलोड़ी कुफ्फर और लेउ नाना गाँव में देवता के मंदिर के प्रांगण में सिंहटू नृत्य दीपावली ओर एकादशी के दिन हजारों दर्शकों के मध्य किया जाता है। यह नृत्य जहां पुरातन संस्कृति व हमारी देव परम्पराओं का बोध कराता है वहीं पर्यावरण और वन्य प्राणी संरक्षण का संदेश भी देता है।

सिक्किम का लाखे नृत्य उत्तर भारत के सबसे लोकप्रिय नृत्यों में से माना जाता है। त्योहारों के दौरान लाखे पोशाक और मुखौटा पहने कलाकार नृत्य करते हैं। मुखौटा कागज़ की लुगदी से बना होता है और बालों के लिए याक की पूंछ का उपयोग किया जाता है।

अरुणाचल के मुखौटे :

अरुणाचल प्रदेश की खामटी जनजाति में मयूर नृत्य होता है। लोकसाहित्य के अनुसार मयूर की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक भारत में हुई थी। वे स्वयं भगवान बुद्ध के कुछ प्रवचनों में दिखाई देते हैं। यह नृत्य भारी बारिश और बाढ़ के कारण 700 रातों के बिछड़ने के बाद मोर के सुखद पुनर्मिलन का वर्णन लिए है। यह किंगनारा (नर) और किंगनारी (नारी) के सच्चे प्रेम का एक लोकप्रिय प्रतीक भी है। इसके इतिहास को ताई लोगों की नृत्य मंडलियों द्वारा जीवित रखा गया है।

उत्तराखंड के मुखौटे :

उत्तराखंड में रम्माण की प्रस्तुति होती है। रम्माण चमोली जिले के सलूड़ गांव में प्रतिवर्ष अप्रैल में आयोजित होने वाला एक उत्सव है। यह विविध पूजा और अनुष्ठानों की एक श्रृंखला है, जिसमें मनोरंजक कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं। इसके माध्यम से भूम्याल देवता की पूजा एवं पूर्वजों और ग्राम देवताओं को पूजा जाता है। रम्माण में भूमि क्षेत्रपाल की

पूजा अर्चना और 18 पत्तर का नृत्य और 18 तालों पर राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान का नृत्य होता है। उल्लेखनीय है कि यूनेस्को द्वारा 2009 ई. में रम्माण को विश्व की सांस्कृतिक धरोहर का दर्जा दिया गया था। पारंपरिक ढोल, दमाऊं की थाप पर मोर-मोरनी नृत्य, बण्या-बाणियांण, ख्यालरी, माल नृत्य रोमांचित करने वाला होता है और कुरजोगी सबका मनोरंजन करता है। अंत में भूमि क्षेत्रपाल देवता अवतरित होकर वर्षभर के लिए अपने मूल स्थान पर विराजित हो जाते हैं। रम्माण 500 वर्ष से भी ज्यादा पुरानी परम्परा है।

शुंभ निशुंभ के मुखौटे :

बंगाल में शुम्भ-निशुम्भ का नर्तन होता है। शुम्भ-निशुम्भ दो राक्षस कठोर तपस्या कर ब्रह्मा से शक्तिशाली वरदान प्राप्त करते हैं और फिर अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर स्वर्ग, मर्त्य एवं पाताल तीनों लोक पर अपना आधिपत्य कर देवताओं को बाहर कर देना चाहते थे। इस बीच, सभी देवता दुर्गा एवं काली की आराधना करते हैं। वे प्रकट होती हैं और शुम्भ निशुम्भ राक्षस का वध करती हैं।

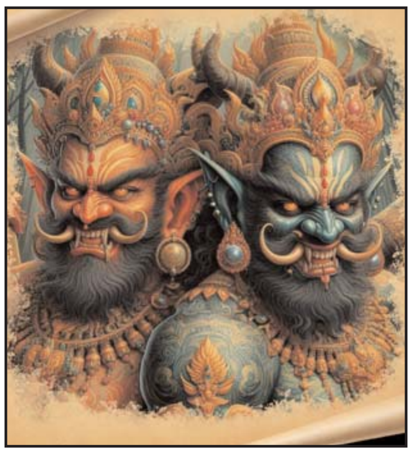

सैला नृत्य और उसके मुखौटे :

छत्तीसगढ़ अंचल में पंडो जनजाति का सैला नृत्य होता है। सरगुजा जिले के जंगल एवं पहाड़ी क्षेत्रों में पण्डो जनजाति निवास करती है। ये लोग अपने को पाण्डवों का वंशज मानते हैं।

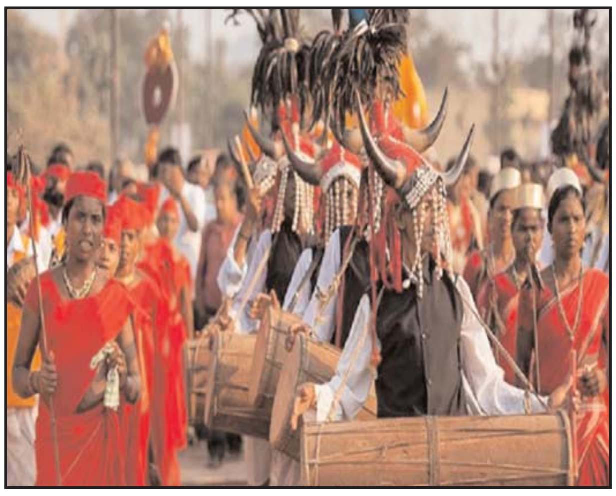

पण्डो जनजाति में करमा नृत्य पारम्परिक रूप से किया जाता है, जिसमें सिर्फ पुरुष नर्तक भाग लेते हैं। वर्ष में एक बार पण्डो करमा त्यौहार मनाते हैं। इस दिन करमा वृक्ष की शाखा रोपित कर उसके चारों ओर युवक करमा नृत्य करते हैं। मांदर, बांसुरी और झाल के सम्मिलित ताल पर गीत गाते हुए पण्डो करमा नृत्य करते हैं। अर्द्धवृत्त, चक्राकार और स्वास्तिक आकार की नृत्य संरचनाएँ करमा नृत्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

इसी प्रकार डिंडोरी का फाग नृत्य लोकप्रिय है। यह होली से लेकर अगले तेरह दिनों तक किया जाता है। इस नृत्य में एक लकड़ी का बना मुखौटा काम में लिया जाता है जिसे बैगा बोली में खेखड़ा कहते हैं। इसे हिरण्यकश्यप के रूप में बीच में रखकर तथा बांस के बने मुखौटे गिज्जी को होलिका के रूप में बीच रखकर नृत्य किया जाता है। इस नृत्य में पुरुष महिला दोनों भाग लेते हैं। इस नृत्य में मांदर, टिमकी, बांसुरी जैसे वाद्य प्रयोग में लाए जाते हैं।

नोट : राजस्थान, मध्यप्रदेश जैसे प्रान्तों में भी मुखौटों की कलात्मक परम्परा रही है। राजस्थान के बिसाऊ की रामलीला में तो राम-सीतादि को छोड़ सभी पात्र मुखौटे धारण करते हैं। पूरी रामलीला मूकाभिनय के रूप में होती है। – सम्पादक

पोथीखाना

कला वसुधा का पारसी रंगमंच विशेषांक

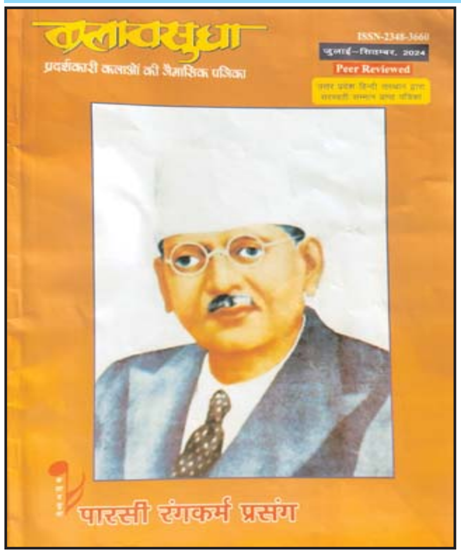

कला वसुधा का यह पारसी रंगमंच प्रसंग विशेषांक भी अन्य विशेषांकों की तरह पठनीय तथा संग्रहणीय तो है ही, कुछ लेख तो बड़े ही श्रम से गहन शोध वाले हैं। यह अंक एक पूरी-की-पूरी पुस्तक है।

पारसी रंगमंच; भारतीय रंगमंच और लोक रंगमंच के बीच की सशक्त कड़ी के रूप में उभरा जो न केवल शहरों अपितु कस्बों में भी अपना प्रभाव दिये रहा। सम्पादिका डॉ. उषा बनर्जी ने सम्पादकीय 'कहना-सुनना' में सार रूप में इस रंगमंच की प्रमुख विशेषताओं का जिक्र किया है जिसे शब्द रंजन के पाठकों के पठनार्थ संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है

आमतौर से भारत में पारसी थियेटर का आना महारानी विक्टोरिया के जमाने में हुआ। इससे पहले संस्कृत नाटक एवं लोकनाट्यों की परम्परा का बोलबाला रहा। सन् 1853 में आरम्भ होकर पारसी थियेटर धीरे-धीरे विकसित हुआ। सन् 1981 तक इसका सुनहरा अतीत रहा। आजादी के बाद पारसी रंगमंच में व्यावसायिक रंगमंच की शुरूआत हुई। कलाकार सभी भारतीय थे पर इसे लाने वाली पारसी नाट्य कम्पनियां ही थी। पर्शिया से विस्थापित होकर शुरूआत में कदम रखा तो वे पारसी कहलाये। इन पारसियों ने ही 1853 के आसपास अंग्रेजी नाटकों को गुजराती में करना आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त इन पारसी कम्पनियों ने पौराणिक ऐतिहासिक सामाजिक विषयों को भी नाटक का विषय कथ्य बनाया।

भारतीय रंगमंच में पारसी रंगमंच को प्रतिष्ठित करने वाले अल्फ्रेड कम्पनी के मालिक कावसजी पालकजी खटाऊजी थे जिन्होंने यहां के अनेकों नाट्य प्रेमियों को अपनी अल्फ्रेड थियेटर कम्पनी में पहचान दी जिनमें सबसे मशहूर नाट्य लेखन निर्देशन आगा मुहम्मद शाह हश्र कश्मीरी थे जो कि 13 अप्रेल 1876 को बनारस के प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे थे किन्तु अपने परिवार के खिलाफ जाकर पारसी रंगमंच को अपना कार्य क्षेत्र बनाया।

पारसी रंगमंच के लगभग सभी लेखक हिन्दी, उर्दू, गुजराती आदि भाषाओं को जानने वाले थे। इनमें पर्दों का इस्तेमाल, हैरतअंगेज स्टेज और बीच-बीच में कॉमिक ड्रामा भी होता रहा। इसके प्रमुख लेखक आगा हश्र कश्मीरी, नारायण प्रसाद वेताव और राधेश्याम कथावाचक आदि लेखक यह गंगा जमुनी तहजीब का मेल था। लोगों को टिकिट लेकर नाटक देखने की परम्परा यहीं से पड़ी।

संवादों को पद्य में लिखते थे। संवाद खुले, लम्बे, लगातार होते थे। पर्दा मंच के सामने की ओर होता था जो नाटक से पहले उठता था और नाटक खत्म होने पर बन्द होता था। यह पर्दा ऊपर की ओर उठता था जो दर्शकों को उत्साहित करता था। ये पर्दे दो तरह के होते थे। एक बाहरी ओर का दृश्य दिखाते थे तो दूसरा घर-महल के भीतर का हिस्सा आदि दिखाते थे। चमत्कारिक ढंग से खुलते बन्द होते थे। ये थियेटर चतुर्भुजकार होते थे। मंच की चौड़ाई 75 फीट और लम्बाई 60 फीट रखते थे। दर्शकों के लिए सामने तखत पण्डाल तैयार होते थे। चमत्कारपूर्ण दृश्यों का महत्व था। चोर दरवाजे, गुप्त दरवाजे बनाये जाते थे जो देवी-देवताओं के अचानक प्रकट होने के लिए और अन्तर्ध्यान होने के लिए होते थे।

पारसी कम्पनी शहर-शहर घूम-घूम कर प्रदर्शन करती थी। अत: मंच का निर्माण वहां से प्राप्त सामग्री के अनुसार ही होता था। चटक मटक पर्दे, दृश्य विधान एक-दूसरे के पीछे दूर तक पर्दा लगाते थे। पर्दों पर ही टेबल कुर्सी आदि के दृश्यों का प्रयोग होता था। पारसी थियेटर में मंगलाचरण नहीं होता था क्योंकि इनके प्रदर्शन किसी धर्म विशेष से नहीं जुड़े होते थे। यह मंच विभिन्न धर्म समुदाय का एकता का प्रतिनिध था।

सभी पात्र अपनी-अपनी भूमिका अनुसार चटक रंगों की पोषाक पहनते थे। भड़कीले रंगों के लेपन से मुख सज्जा होती थी। नायिकायें अबरक चेहरे पर मलती थी ताकि चमक बनी रहे। रानी परी आदि सभी झिलमिल मुकुट, कपड़े पहनते थे। नाटकों में पात्रों का प्रवेश और प्रस्थान भी अति नाटकीय होता था जिससे दर्शक चकित हो जाते थे। प्रस्थान के तरीके शेक्सपियर रंगमंच से प्रभावित थे।

योरोप से आई ड्रामेटिक कम्पनी से पारसी रंगमंच भारत में आये जिन्हें कलकत्ता, मुम्बई के धनाढ्य वर्ग का संरक्षण था। इसमें अंग्रेजी जानने वाले कलाकारों ने अंग्रेजी की नकल कर नाटक खेला। बाद में यह हिन्दू ड्रैमेटिक कोर के रूप में परिणत हो गया।

विशेषांक में कुल 42 आलेख पढ़ने पर बीते जमाने का पारसी थियेटर जीवन्त हो उठता है। राजस्थान में भी पारसी थियेटर ने बड़ा रंग जमाया और जो अन्य नाटक प्रदर्शित होते उन पर भी पारसी रंगमंच का बड़ा प्रभाव रहा। बड़ी साइज के कुल 160 पृष्ठों में संयोजित यह अंक पोस्टेज व्यय सहित मात्र 200 रूपये का है।

– डॉ. तुक्तक भानावत

पारसी थियेटर से जुड़ा पं. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का एक रोचक किस्सा बहुत प्रचलित है जिसे लेखक डॉ. राजेन्द्रकृष्ण अग्रवाल ने प्रस्तुत किया-

एकबार श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागरजी एक पारसी थियेटर में टिकिट लेकर दर्शकगण के मध्य जा बैठे। नाटक में एक ऐसा सीन आता है जिसमें कि उसके नायक को खलनायक का अभिनय करने वाला पात्र बहुत मारता है और जब उसे चाकू निकालकर जान से मारने को आमादा होता है। विद्यासागरजी नाटक के इस दृश्य में इतने तल्लीन हो गए कि पूरी तरह से साधारणीकृत हो गए। वे यह भूल गये कि वह एक नाटक देख रहे हैं न कि कुछ सत्य घटित हो रहा है। वे अपने को सम्हाल न सके और तत्क्षण पैर से चप्पल उतारकर खलनायक का पार्ट अदा कर रहे पात्र को निशाना बनाते हुए मंच पर उसे फैंक दिया। बाद की कहानी लगभग एक जैसी ही है।

कहते हैं इस अप्रत्याशित घटना से क्षणभर के लिए पाण्डाल में सन्नाटा पसर गया किन्तु बिना किसी देरी के वहां भगदड़ मच गई और 'पकड़ो-पकड़ो' की आवाज के साथ ही अपनी गलती पर अवाक् से खड़े रह गए ईश्वरचन्द्र विद्यासागरजी को लोगों ने घेर लिया। नाटक का निर्देशक भी जब नीचे आया तो यह देखकर दंग रह गया कि चप्पल फैंकने वाला व्यक्ति कोई अवांछनीय व्यक्ति नहीं, वह तो श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसा महान व्यक्तित्व हैं। वह तुरन्त मंच की ओर लौटा और उनकी चप्पल को एक मेडल की भांति रस्सी में पिरोकर गले में डालकर दर्शकों के सम्मुख उपस्थित हो गया और भावुक होकर कहने लगा कि जीवन में मेरे और मेरे पात्र के लिए इस चप्पल से बढ़कर बड़ा कोई पुरस्कार नहीं हो सकता। मेरे पात्र के द्वारा अभिनीत उस दृश्य में एक महान हस्ती इस कदर रसमग्न हो गई कि भावावेश में मंच पर चप्पल ही फैंक दी। वह इस बात से अपने आप को और अपने उस कलाकार को बहुत सम्मानित महसूस कर रहा था।

लोकजीवन में जीवंत संस्कृत ग्रंथों के पात्र

- डॉ. कल्याणप्रसाद वर्मा -

गाँव जाते हुए रास्ते में एक जगह बस रुकी। देखा भीड़ जमा थी, आवाज सुनी - दो महिलाएँ एक-दूसरे को मंथरा के संबोधन से चिल्ला-चिल्लाकर तानें कस रही थीं। एक कह रही थी- 'तू मंथरा', दूसरी कह रही थी- 'तू मंथरा'। थोड़ी देर बाद बस आगे बढ़ गई। मैंने बस में सवारियों से पूछा - 'लोकजीवन के ये उपमान आज एक-दूसरे को गाली देने में काम आ रहे हैं। ये कितने खरे हैं।

महाभारत, रामायण, भागवत पुराण आदि संस्कृत के ऐसे ग्रंथ हैं जिनके पात्रों ने लोक जीवन को कमोबेश प्रभावित किया ही है । देश-काल की सीमा से हमारे लोक जीवन का हिस्सा बन गए हैं। कितने खरे हैं ये उपमान जो लोक जीवन में रचे-बसे देखे जा सकते हैं। घर के भेदी को विभीषण कहा जाता है, वहीं जो माता-पिता अपने बच्चों के प्रति मोहांध होते हैं वे 'धृतराष्ट्र और गांधारी' कहे जाते हैं। जो व्यक्ति अपने छल-छद्म से किसी को लड़ाने-भिड़ाने में सफल होता है उसे 'शकुनि' व जो अहंकारी होता है उसे 'दुर्योधन' कहने में लोग नहीं हिचकिचाते हैं। इतना ही नहीं, जो दानी होता है, उसे 'कर्ण', जो सत्य और धर्म पर टिका रहता है अथवा झूठ नहीं बोलता है, उसे 'युधिष्ठिर', जो ताकतवर कद्दावर होता है, उसे 'भीम', जिसका अपने लक्ष्य पर ध्यान रहता है, उसे 'अर्जुन' और जो दलित छात्रों से भेदभाव करता है, उसे 'द्रोणाचार्य' एवं जो अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहता है, उसे 'भीष्म', जो किसी एक की चहेती बन नारी जाति में वैमनस्य पैदा कर देती है, उसे 'मंथरा' का उपमान देते हुए लोगों को देखा जा सकता है।

पाटमदे के हाथों पाल की नींव

- डॉ. दिलीप धींग -

मेवाड़ के राणा राजसिंह (राज्यकाल वि.सं. 1709 से 1737) के समय में राजसमन्द झील का निर्माण हुआ था। बरसात के उपरान्त जैसे ही झील में पानी भरने लगता तो झील की पाल टूट जाती थी। उस समय के कुशल वास्तु विशेषज्ञों और अभियन्ताओं ने श्रेष्ठ सामग्री के साथ पाल का निर्माण किया था। लेकिन पानी आने पर पाल का टूटना जारी रहा। इधर, झील के साथ ही राणा के दीवान दयालशाह ने बावन जिनालय युक्त एक भव्य जैन मन्दिर बनवाया। यह मन्दिर 'दयालशाह का किला' नाम से प्रसिद्ध है। दयालशाल को मन्दिर की प्रतिष्ठा करवानी थी। पानी आने पर झील की पाल टूट जाने से हैरान राणा मन्दिर की प्रतिष्ठा की अनुमति नहीं दे रहे थे। झील भर नहीं पा रही थी और मन्दिर की प्रतिष्ठा रुकी हुई थी।

दयालशाह की पत्नी पाटमदे (पाटमदेवी) एक अणुव्रती और शीलवती नारी के रूप में जनजीवन में श्रद्धास्पद थी। राणा ने अनुभवियों के साथ विचार-विमर्श किया और धर्मनिष्ठ श्राविका पाटमदे के हाथों से पाल की नींव रखवाई। रात-दिन काम करवाकर पाल बंधवाई। उसके बाद चातुर्मास की भारी वर्षा के प्रचुर पानी से भी पाल नहीं टूटी। ऐसा होने पर राणा ने तुरन्त सहर्ष मन्दिर की प्रतिष्ठा की अनुमति प्रदान कर दी। राजाज्ञा प्राप्त होने पर वि.सं. 1732 की वैशाख शुक्ल सप्तमी को विजयगच्छ के विनयसागरसूरि एवं साण्डेराव गच्छ के देवसुन्दरसूरि के सान्निध्य में इस मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई। शिल्प और आस्था, दोनों ही दृष्टियों यह जिनालय महत्वपूर्ण है।

बाड़मेर की नक्काशी

-पी. आर. त्रिवेदी-

रेगिस्तानी इलाके में मीलों तक फैले रेतीले मैदानों में रहने वालों का जीवन बड़ा ही दूभर रहता है। न वृक्ष, न वनस्पतियां और न पीने का पानी; अभाव-ही-अभाव मिलेगा परन्तु वहां भी लोग न हार मानेंगे, न निराश होंगे बल्कि जीवन को कैसे अधिकाधिक सुन्दर तथा रसमय बनाकर जिया जाय, यह सीखने को मिलेगा।

यह आश्चर्य ही है कि ऐसे अभावग्रस्त इलाके में ही संगीत के जितने गायक, वाद्यों के वादक और कलाकारों के करिश्में देखने को मिलेंगे, अन्यत्र नहीं मिलेंगे। ऊंटों के जो करतब यहां मिलेंगे, दांतों तले अंगुली दबाते रह जायेंगे। यहीं नड़ वादक करणा हुआ। खड़ताल वादक सिद्दीक और गायक नूर मोहम्मद ने अपनी सांगीतिक कलाओं से झूंपे से बाहर कदम रखकर विश्व भ्रमण किया। उनकी विरासत ने जो द्वार खोले, आज अनेक कलाकार अनमोल खजाने की तरह दीप्त हो रहे हैं। मटकी जैसा वाद्य यहीं जीवन रस का संगीत बना हुआ है।

काष्ठकला की दृष्टि से भी अनेक कलाकार उत्कृष्ट नक्काशी काम के लिए पहचान बनाये हैं। एक नाम बाड़मेर जिले के ऊण्डखा गांव के प्रहलादराम का लिया जाता है जो काष्ठकला पर अपनी उत्कृष्ट कला का सुचर्चित सुनाम लिये है। इनके समाज में वर्षों से चला आ रहा मिथक आज भी सुनने को मिलता है। उसके अनुसार अपनी कला अपनी सुथार जाति के ही लोगों की धरोहर बनी रहे। अन्यों को सिखाना वर्जित रहेगा तो ही हम ठीक से अपना भरण-पोषण कर पायेंगे और हमारा नाम चलता रहेगा।

प्रहलादराम ने अन्यों को यह कौशल सिखाया। उसका सिद्धान्त था, ज्ञान फैलाने से बढ़ता है। उसे कैद करने से वह कुन्द पड़ जाता है और फलीभूत भी नहीं हो पाता है। पूरी प्रकृति नदी, पहाड़, वृक्ष, जंगल सबके सब अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जी रहे हैं तो मनुष्य को भी संकीर्ण होने की बजाय उदार होना चाहिए।

यह सोच प्रहलादराम ने लकड़ी के छोटे-से-छोटे तथा बड़े-से-बड़े शिल्प पर अपनी नक्काशी कला से उसे जो खूबसूरती देना शुरू किया कि पूरे चौखले में उसे कद्र मिलते-मिलते उसका क्षेत्र विस्तार हुआ। शुरू में उसने अपने यहां उपलब्ध रोहीड़ा की लकड़ी पर काम प्रारम्भ किया पर जब इसकी उपलब्धता नहीं रही तो सागवान की लकड़ी काम में लेनी शुरू की। यह लकड़ी इन्दौर, आसाम, भावनगर से मंगवानी प्रारम्भ की।

पहले से चली आ रही परम्परा में उसने बहुत सारी अपनी खूबी का कौशल दिखाते पाट, बिजानी, सुरमादानी, हुक्का, विविध लोकवाद्य, चारपाई, चरखा (अरठ), सन्दूक, खिलौने, दरवाजे की चौखट, घट्टी, चौखटों के घोड़े, मकान की छत (सियाल), बैलगाड़ी, पिलान आदि के साथ नई चलन के सोफे, टेबल, कुर्सी, टीवी, रैक, बक्से, फोटोफ्रेम, ड्रेसिंग टेबल, डाइनिंग सेट, पलंग, पालने लेकर उसको भी नक्काशीदार बनाकर बहु उपयोगी बनाया।

प्रहलादराम इसके लिए सोरसी, गिणीयार, पेचकस, पकड़, अरगत, होण, पथरी, खरोती, बरमी, कवोण, रन्दो, हथोड़ी, गोल नरुया, सफाई नरुया, उप्पा, नखलो, आजोली, सोनस, भीड़ो, कम्प्रेशर जैसे यन्त्रों-औजारों की सहायता से मनचाही चीजों को मनभावन बनाते हैं।

रेगिस्तान जैसे इलाकों में ही नहीं, अन्यत्र प्रचलित शिल्प और उद्योग को उचित संरक्षण और कारीगरों को रोजगार के साधन उपलब्ध कराने में सरकार का महत्त्वपूर्ण योग अनिवार्य है। प्रहलादराम का भी यही कहना है कि नक्काशी जैसे उद्योग को पनपाने के लिए बिचौलियों से मुक्ति दिलानी होगी। अच्छे बाजार बनाने होंगे। समय-समय पर निर्माणकर्त्ताओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी होगी। नई-नई डिजाइनों की जानकारी से उन्हें अवगत कराना होगा। सस्ती दर से लकड़ी उपलब्ध करानी होगी। सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध कराना होगा तब जाकर अधिकाधिक लोग खरीददार के रूप में आगे आयेंगे और अनेक लोगों को रोजगार उपलब्ध हो सकेगा।

स्मृतियों के शिखर (192) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कठपुतली कहां से कहां तक

जोधपुर की राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा उदयपुर में 26 से 28 मई 2023 को हुई राष्ट्रीय लेखन-निर्देशन कार्यशाला में मध्य दिन 27 मई को मेरे वक्तव्य का विषय ही बाल एवं कठपुतली नाट्य लेखन था। ऐसी कार्यशालाओं का सुफल तो

अमरसिंह राठौड़ का खेल

विषय विशेषज्ञों से मिलना-जुलना तथा आपसी विचार-विमर्श से बहुत कुछ सीखने, सुनने तथा लिखने की गंभीर प्रेरणा मिलती है। नई पीढ़ी के युवाओं से भी अच्छा संवाद हो जाता है और अपना निज का आत्म विश्लेषण तो हो ही जाता है। एक लेखक के लिए लिखने की ताकत ऐसे आयोजनों से भी मिलती है।

एक-दो-चार अथवा पांच दशक तक लिखने के बाद एक लेखक को अपनी लेखनी की हलचल की समीक्षा करनी होती है कि वह कहां तक कारगर लेखन कर पाया है। उसके पाठक भी

कठपुतली नर्तकी

हैं कि नहीं। कितने शोधार्थी और जिज्ञासु मन के व्यक्तियों ने अपने लेखन का यश समझा और जस लिया है अन्यथा फिर लेखक को इस पड़ाव पर आकर भी नये मोड़ से सोचने, कुछ अलग से हटकर करिश्मा दिखाने का अवसर सुलभ होता है।

यह भी सच है कि एक लेखक को अपनी मर्जी और मौज के अनुरूप कार्य करने की अनुकूल स्थिति-परिस्थिति सुलभ हो। सौभाग्य से मुझे उदयपुर में भारतीय लोककला मण्डल जैसी संस्था मिल गई जहां सबरंगी पारम्परिक कला-संस्कृति के दर्शनों का लाभ मिल सका। इसके लिए मैंने कोई बड़ा बनने का सपना नहीं बुना तो चुपचाप काम करता रहा। यह और बड़ा सुहागा सौभाग्य रहा कि इस संस्था के संस्थापक देवीलाल सामर तब तक अपनी ख्याति की बुलंदगियां चढ़ रहे थे। वे स्वयं कलाकार, जमीनी सोच और समझ के कलाकार थे। नर्तन, गायन तथा वादन की भंगिमाओं को बखूबी अपने अंग-अंग में उतार लेने के उस्ताद थे।

सामरजी की अपनी कलाकारों की सुव्यवस्थित मण्डली थी। मेरा काम लोकधर्मी जीवन जी रहे लोक का अध्ययन, सर्वेक्षण, संरक्षण और लेखन-प्रकाशन का था। कभी-कभी जब गांवों में प्रदर्शन होता तो मेरा शोधविभाग भी साथ हो जाता। हम दिन को कलाकारों से मिलते। उनसे उनकी कला चेतना के बारे में पूछना करते। उनकी गायकी का रेकार्डिंग करते। फोटोग्राफी करते। एक ही कलाविधा की जानकारी को पुख्ता बनाने के लिए विविध कलाकारों, विद्वानों, चिन्तकों तथा मोतबीरों से सवाल-जवाब कर संतुष्ट होते।

सामरजी ने मुझे मुक्त मन से काम करने का अवसर दिया तो मैंने भी उन्मुक्त मन से उस अवसर को सवाया बनाकर दिखाया। बहुत बाद में पता चला कि वे और मैं दोनों ओसवाल जैन हैं। निवास भी हमारा कानोड़-भींडर इतना आसपास कि लोग आज भी हमारे गांव को कानोड़-भींडर, भींडर-कानोड़ संयुक्त नाम से जानते हैं फिर हम दोनों की घरेलू परिस्थितियां भी एक जैसी बड़ी विडम्बना लिए रहीं।

सामरजी ने जो कला-संस्कृति क्षेत्र की लोकसम्पदा देखी, सुनी, परखी उसके आधार पर कुछ नई रचनाएं, नृत्य-संवाद, युगल-नृत्य, नृत्य-नाटिकाएं तैयार कीं। ऐसा ही लेखन उन्होंने मेरे से भी करवाया। कुल मिलाकर कला मण्डल में मात्र पारम्परिक परम्पराशील धरोहर का रखरखाव, उन्नयन, संरक्षण ही नहीं कर उसी का आधार लेकर प्रयोगधर्मिता से उसे नया कुछ नव्य, कुछ भव्य रूप देकर जो कार्य किया वह लोगों के चित्त पर चढ़ गया।

ग्रीष्मावकाश में जून 1958 में मैंने कलामण्डल जोइन किया। भागजोग से जुलाई-अगस्त में राजस्थान विकास विभाग द्वारा प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने का अनुबंध मिला। उदयपुर के पास बेदला रावजी के महलों में पूरे राजस्थान के लोककलाकारों को बुलावा भेजा। जत्थे-के-जत्थे कलाकार आते गये। सामरजी और मैं उनकी प्रस्तुतियां देखते। उनका चयन करते और रात को अच्छे कलाकारों को गांव की जनता के सामने पेश करते।

ऐसे गांव-के-गांव प्रतिदिन उनकी कलाप्रस्तुतियां देखने रात 12 बजे तक ठठ बैठे रहते। देखते रहते। सराहना करते रहते। एक तरह से यह कलाकारों का ही प्रशिक्षण काल नहीं था, मेरा भी जीवन का प्रथम प्रशिक्षण ही था। मैं तो अकेला बी.ए. पास अविवाहित था सो मेरे लिए अच्छा बसेरा भी हो गया और कलाकारों के संग बैठने-उठने, खाने-पीने, सिखने-सिखाने का द्वार भी खुल गया।

आखिरी शिविर में एक कठपुतली दल आया। यह सबके लिए दिलचस्प बना। पहलीबार ही मैंने ऐसा सधासधाया पुतली चलाने वाला पारम्परिक दल देखा जो कठपुतलियों को आजीविका की पवित्र देवी-शक्ति समझता था। उस दल को मैंने उस खदान-सा पाया जिसके पास कठपुतली विषयक राजा विक्रमादित्य के सिंहासन बत्तीसी से लेकर अंतिम अमरसिंह राठौड़ की कथा-गाथा की आस्थामूलक मंच प्रस्तुति थी। सामरजी और मैं धन्य हो उठे।

सामरजी तो परिपक्व कलापारखी थे कूबो कुम्हार की तरह तरह जो हांडा घड़ै बीस तो सोना का व्है जावै तीस पर मैं तो कच्चा घड़ा था जिसे सामरजी ने ठोकपीट कर टंच बना दिया। मैं सुबह से शाम तक नाथू भाट के उस दल के साथ कभी उनका खेल देखता तो कभी उनसे खेल की बारीकियां जानता। ऐसे करके मैंने पहलीबार कठपुतली खेल का हू-ब-हू स्क्रिप्ट लिखा और जाना कि मानवनाट्य से कठपुलीनाट्य कितना भिन्न और किन-किन खूबियों से अटा पड़ा है।

नाथू उर्फ नत्थू भाट के साथ उसका पुत्र हड़मान और बहू टोलकी थी जो मंच के पास कठपुतली खेल के बोल-बोल उल्था करती थी। कठपुतलियां तो बोलती नहीं थी। केवल चिड़िया जैसी चहक करती थी। नचानेवाला नाथू भाट बड़ा जबरा कलाकार था। एक उंगली में एक धागे के सहारे पूरी पुतली को थिरकाने में उसे कमाल हांसिल था। टोलकी ढोलकी के सहारे अपनी मधुर

प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के साथ कठपुतली दल

स्वरलहरी में खेल को सवाया बनाने में कोई कसर नहीं रखती थी।

कठपुतली का वह अमरसिंह राठौड़ का खेल था जो अंतिम स्वांसें ले रहा था और मजे की बात यह रही कि अमरसिंह नागौर का राजा था और नाथू भाट भी नागौर जिले के जीजोट गांव का रहने वाला था। खेल में जिस शानदार बेहतरीन ढंग से अमरसिंह के राठौड़ी शौर्य और शूरपने को दिखलाया गया वह बेहिसाब अजूबा अचरज भरा था।

उल्लेखनीय है कि अमरसिंह जोधपुर के राजा गजसिंह का बड़ा पुत्र था। उसका जन्म 12 दिसम्बर 1613 को हुआ। वह बड़ा साहसी, पराक्रमी पर उद्दंड स्वभाव का था सो गजसिंह का कोप भाजन बना फलत: वह अपने कुछ साथियों के साथ 1633 में शाहजहां के दरबार में पहुंचा। बादशाह ने उसकी वीरता से प्रसन्न हो 2500 जात, पैदल सैनिक तथा 1500 घुड़सवार देकर राव के खिताब से सम्मानित कर उसे नागौर का जागीरदार बना दिया।

इस खेल की कठपुतलियों को देख मैंने कठपुतली को एक सधी हुई परिभाषा में बांधते उसके खेल की सारपूर्ण प्रस्तुति की झलक देते लिखा-

काठ के घड़वाली, बिना पाँव की वह गुड़िया, जो अपने गोल चपटे चेहरे, लम्बी-मोटी आँखें, उभरे-ऊंचे कान, फूले हुए नथूने, लटके खुले ओठ तथा चपटी- चौड़ी कनपटी लिए रंगबिरंगी वेशभूषा में अपनी रूढ़िगत रूपसज्जा एवं आकार-प्रकार के साथ लचक लिये होती है, कठपुतली कहलाती है। इन पुतलियों में 'राजापुतली' लम्बे झग्गे पहने होती है।

ये झग्गे रुपहली, सुनहली, चौड़ी तथा पतली कोर से सजे होते हैं। झग्गों के नीचे साधारण कपड़े का पोतिया पहना रहता है। इनके एक हाथ में तलवार तथा दूसरे में ढाल रहती है। ये पुतलियां चौदह इंच से सौलह इंच तक लम्बी होती हैं। राजदरबारी तथा अन्य पुतलियां अपेक्षाकृत इनसे छोटी होती हैं। वे आठ इंच से दस इंच तक लम्बी होती हैं। कठपुतली नचानेवाला सूत्रधार नट अपने मुँह में एक विशेष प्रकार की सीटी रखता है, जिससे कठपुतलियों की बोली नि:सृत होती है। इसे ढोलक बजाने वाली महिला अपनी

कठपुतली कलाकार तोलाराम के साथ डॉ. महेन्द्र भानावत

बोली में उलथाकर दर्शकों को खेल से परिचित कराती है।

राजा-महाराजाओं के अतिरिक्त अमरसिंह के इस खेल में डुगडुगी वालों का 'और बजेगी, थोड़ी सी और बजेगी' कहकर जोर-जोर से डुगडुगी बजाना, चोबदार का 'जो आज्ञा' कहकर नतमस्तक होना, पहरेदार का 'नजर महरबान' कहकर राजा-महाराजाओं का स्वागत करना, पट्टेबाज का 'लाहौर का तेगा और विलायत की तलवार' चलाना, एक ही पुतली का जनाना तथा मर्दाना स्वांग भरना अथवा आगरे का देवर तथा दिल्ली की भौजाई का रूप धारण करना, वेश्याओं का 'दुपट्टा मेरा बेंगनी रंगवा दो' तथा 'सैंया तेरी गोदी में गेंदा बन जाऊंगी' गीत पर नाच की बारीकियाँ भरना, मालिन का 'गेंदा हजारी का फूल' बेचना, ऊंट का 'मारुजी ढोला' से मिरगाणैणी' के देश पधारने की अरजी करना तथा नखराले गोरबंद पर लट्टू होना, घोड़े वाले जवान के बरछी मारने पर किसी मनचली का तिरछी होना, घोड़े का 'घुड़लो कियां पलाण्यो राज' के रूप में अपनी पूंछ हिलाना, मगर का मुंह फाड़ना, धोबी के गधे का चिल्लाना तथा फूलों की झोली में होली का आह्वान करने वाले बहुरूपियों के स्वांग भरना; ये सारे कला-करिश्मे', कठपुतली के खेल में हंसी का साम्राज्य फैला कर दर्शकों को लोटपोट कर देते हैं।

कठपुतलियों के सम्बन्ध में प्राय: यह ठीक ही कहा जाता है कि ये मानव की अनुकृति नहीं हैं और न इस लोक की ही उपज हैं। वे किसी अन्य लोक से यहां अवतरित हुई हैं। इसीलिए उनकी संरचना, क्रियाकलाप, बातचीत, हावभाव एवं तौरतरीके मानवजीवी नहीं होकर किसी विशिष्ट जीवधारी से प्रतीत होते हैं।

पुतलियों की ये अनुकृतियां असल नहीं हैं, नकल हैं और नकल में असल की प्रतिच्छाया दर्शाती हैं। यह प्रतिच्छाया इतनी पैनी और पैठी हुई होती है कि असल को भी मात करती है। असल की 'असल-नकल' करने में जितनी कारगर ये पुतलियां सिद्ध हुई हैं उतनी अन्य कोई सजीव वस्तु भी नहीं। इसका मुख्य कारण यह है कि ये पुनलियां जितनी जड़ लगती हैं उससे कहीं अधिक चैतन्य स्वरूप हैं।

दिखने-दिखाने में इनका जड़रूप भी चैतन्य ही लगता है और फिर जब ये मंच पर आती हैं तो इन्हें संचालित करने वाला अदृश्य सूत्रधार मानव स्वयं पुतली बनकर अपना शिल्पतंत्र उड़ेल देता है और तब ऐसा लगता है कि हम किसी अन्यलोक में पहुँचकर वहां के विचित्र प्राणियों का तमाशा देख रहे हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन
उदयपुर, मंगलवार 15 अक्टूबर 2024

सम्पादकीय

उत्तराखंड का वह खेत जहां की घास प्रसाद रूप में बंटती है

एक खेत! हर वर्ष पहली बार जब भी वहां घास कटता है, ग्राम्य जनों में प्रसाद स्वरूप बंटता है। जी हां! यह सच है।

वहां उत्सव-सा माहौल दिखता है। आस्था दिखती है। उल्लास दिखता है। गीत-प्रीत और संगीत दिखता है। सामूहिकता का भाव दिखता है। अपनी जड़ व ज़मीन से जुड़ाव दिखता है। इसलिए उस खेत का घास लेने के लिए गांव के हर घर-परिवार से कोई-न-कोई सदस्य अवश्य पहुंचता है।

यह दिव्य खेत कहीं और नहीं बल्कि देवभूमि उत्तराखण्ड के सीमांत उत्तरकाशी के पश्चिमोत्तर रवांई क्षेत्रांतर्गत बनाल पट्टी मध्य में अवस्थित है जिसे लोकवासी देऊडोखरी (देवडोखरी) के नाम से जानते-मानते, पूजते-बांदते (नमन करते) हैं।

उस दिव्य भूमि को बांदता (प्रणाम करता) है। पूजता है। धूप-दीप और भोग-प्रसाद चढ़ाता है। इसी बहाने आराध्य इष्टदेव श्रीरघुनाथजी का पूजन-अर्चन, वंदन-स्मरण करता है। धूप-पिठाई (रोली-चंदन), पत्र-पुष्प, मीठा रोट (गुड़ मिली घी के साथ बनी रोटी जो सामान्य रोटी से कुछ अधिक मोटी व बड़ी होती है) ख्याता (चढ़ाता) है। छीमू-टीखू करके लोक पूजित-प्रतिष्ठित देवी-देवताओं को मनाता है और अपार उमंग-उत्साह व आस्था-विश्वास के साथ दाथरी (दरांती) उठाकर घास काटने लग जाता है लेकिन पूजन-अर्चन की यह प्रक्रिया तब तक आरम्भ नहीं होती जब तक गांव के हर परिवार से कोई-न-कोई पहुंच नहीं जाता है। सबके पहुंचते ही सामूहिक पूजन-वंदन होता है और फिर घास काटने में जुट जाता है।

घास काटते हुए एक-एक नर-नारी बेहद आनंदित-उत्साहित नज़र आते हैं। घास काटते-काटते सभी आपस में खूब बतियाते हैं। एक से बढ़कर एक किस्से-कहानियां सुनाते हैं। फूले (बंडल) बांधते हैं। बोझा बनाते हैं लेकिन उसे पीठ पर उठाने से पहले उस पावन भूमि और भूमि से उपजी दिव्य शक्ति के प्रति अपनी कृतज्ञता अभिव्यक्त करना नहीं भूलते हैं जिसके नाम से पीढ़ियों से सुरक्षित-संरक्षित है यह खेत। इसलिए गीत की तांद में जुट जाते हैं। देवता की हारूल (लोक गीत की एक विधा) लगाते (गाते) हैं और काम के नाम पर भी जमकर उत्सव मनाते हैं। हंसते-मुस्कुराते, गाते-गुनगुनाते, नाचते-खेलते हुए गीतों की श्रृंखला इस कदर वेगवान हो जाती है कि आस्था से शुरु होकर आनंद-अनुरंजन तक पहुंच जाती हैं। यही लोक की खासियत भी है कि वहां प्राय: हर अवसर पर उत्सव-सा माहौल नज़र आता है जो लोकवासियों की उत्सवधर्मिता को दर्शाता है।

यह एक ऐसा खेत है जो गांव की सरद (सरहद) में पड़ने वाले सेरे के बीच में होते हुए भी यहां गेहूं, नाज (धान), कोदू (मंडुवा)-झंगरू, चीणा-कौंणी की फसलें नहीं लहलहाती हैं बल्कि श्रद्धा-भक्ति, आस्था-विश्वास की अलौकिक सुखानुभूति बरसाती है। तभी तो माटी मोती बनकर मस्तक की आभा बढ़ाती है। इसलिए यह पावन भूमि शारीरिक से कई अधिक मानसिक व आत्मिक पोषण लुटाती है।

लोक मान्यता के इसी खेत में हल जोतते हुए हमारे पुरखों को एक पाषाणिक मूर्ति प्राप्त हुई। लोकवासी उसके दैवीय चमत्कारों को देख ऐसे चमत्कृत हुए कि वही दिव्य शक्ति इस पूरे क्षेत्र के अतिरिक्त पुरोला की रामा व कमल सिराई पट्टियों में भी आराध्य इष्टदेव के रूप में श्री रघुनाथजी के नाम से पूजित-प्रतिष्ठित हो जाती है। इस क्षेत्र के गैर व पुजेली में श्री रघुनाथजी के दो दिव्य व भव्य मन्दिर बने हुए हैं जहां वे क्रमश: छह-छह माह विराजते हैं। वर्षों पहले जब से इस खेत में जो कोटी गांव में पड़ता है इष्टदेव की वह मूर्ति उपजी तब से ही ग्राम्यजनों द्वारा यह खेत उसी दिव्य शक्ति को ही समर्पित है। इसलिए इस खेत में न कोई फसलें बोता-काटता है, ना अपना एकाधिकार जमाता है। यह देवता की भूमि है और देव कार्यों के लिए ही उपयोग में लायी जाती है।

यह भी उल्लेखनीय है कि तीन तहसीलें, यमुना और टौंस (तमसा) दो नदी घाटी तथा लगभग दो दर्जन पट्टियों एवं 365 गांवों के इस पूरे रवांई क्षेत्र में आज गांव-गांव होने वाली रामलीला के मंचन की शुरुआत भी इसी देवडोखरी से हुई है। यहां वर्षों पहले रामलीला की शुरुआत हुई, वर्षों तक होती रही। सौभाग्य से हमें भी मंचन, आयोजन व अभिनय के अवसर मिले। तत्पश्चात भी समय-समय पर यज्ञ-अनुष्ठान होते रहते हैं। श्रीमद्भागवत व अन्य कथाएं हुईं। सामाजिक-सांस्कृतिक व शैक्षिक संगोष्ठियों के लिए भी यह एक उपयुक्त स्थान है। मुझे याद है कि श्री जगवीरसिंह भंडारी के ब्लाक प्रमुख तथा श्रीमती जयपूरी देवी ग्राम प्रधान रहते हुए खेत के एक छोर पर एक मंच का निर्माण करवाया गया। क्योंकि उससे पहले यहां मात्र एक कुटिया हुआ करती थी। कुटिया में काफ़ी लम्बे समय तक श्री श्रद्धानंद महाराज रहे। उन्होंने भी गांववासियों के सहयोग से कुटिया को बनाने-संवारने के भरपूर प्रयास किये। वृक्षारोपण करवाया। पं. श्री गोपाल मणी महाराज से श्री रामकथा करवाने की भाव-भूमि में भी उनका बड़ा योगदान रहा। देवडोखरी में बना यह मंच आज भी उपयोगी साबित हो रहा है।

इन सबके इतर श्री रघुनाथजी भी सोने-चांदी के (झामंण-छतर) आभूषणों से सुशोभित एवं नाना प्रकार की पुष्प मालाओं से सजी-धजी पालकी में सवार होकर पूजा-अनुष्ठान, तीर्थयात्रा तथा ग्राम भ्रमण के बहाने पूरे लाव-लश्कर के साथ मन्दिर के गर्भगृह से बाहर निकलते हैं तो सबसे पहले देवडोखरी ही जाती हैं।

घास कटान के लिए वर्ष का एक दिन तय है और वह दिन है भादों थौलु की बेठनळ का दिन। भाद्रपद मास में इष्टदेव के गैर मन्दिर में भव्य मेला होता है जो 'भादों थौलु' के नाम से प्रसिद्ध है। मेले के अगले दिन को 'बेठनळ/ बेठनळ' के रूप में मनाया जाता है और इसी दिन बेठनळ कोटी गांव के ग्राम्यजन यथेष्ट पूजा-प्रसाद सम्बन्धी सामग्री लेकर देवडोखरी में घास काटने के लिए पहुंचकर घास ही नहीं काटते हैं बल्कि प्रकृति व संस्कृति को समर्पित अपनी महान परम्पराओं का उत्सव भी मनाते हैं।

- अतिथि संपादकीय, दिनेश रावत

सांस्कृतिक परंपरा की अनूठी मिसाल अजोलिया के खेड़ा की रामलीला

- मुकेश मूंदड़ा -

आधुनिकता के इस युग में जहां एक तरफ आज की युवा पीढ़ी फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल प्लेटफॉर्म पर रील्स देखकर पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षित हो रही है वहीं दूसरी तरफ आजोलियां का खेड़ा जैसे गांव में पढ़े लिखे और नौकरीपेशा युवा रामलीला जैसे आयोजनों के माध्यम से अपनी परंपराओं को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं।

चित्तौड़गढ़ जिले का निकटवर्ती गांव आजोलिया का खेड़ा आज भी परम्परा का अनूठा उदाहरण हैं, जहां 55 साल से प्रतिवर्ष शारदीय नवरात्रि में रामलीला का मंचन किया जा रहा है। आधुनिकता के इस युग में जहां एक तरफ आज की युवा पीढ़ी फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल प्लेटफॉर्म पर रील्स देखकर पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षित हो रही है वहीं दूसरी तरफ आजोलियां का खेड़ा जैसे गांव में पढ़े लिखे और नौकरीपेशा युवा रामलीला जैसे आयोजनों के माध्यम से अपनी परंपराओं को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं।

खास बात यह कि यहां रामलीला के किरदार पेशेवर कलाकार नहीं, बल्कि इसी गांव के पढ़े-लिखे युवा व नौकरीपेशा लोग निभाते हैं।

आजोलिया का खेड़ा में 50 वर्ष पूर्व रामलीला के लिए बांस की बल्लियों एवं तिरपाल से स्टेज बनाते थे। आज इसी जगह आरसीसी की छत है और दृश्य दिखाने के लिए बड़ी एलईडी का उपयोग किया जाता है। आयोजन से लेकर किरदार निभाने तक का सारा कार्य रामलीला मंडल आजोलिया का खेड़ा के बैनर पर गांव वाले ही करते हैं। कार्यक्रम का सारा खर्च मंडल के सदस्य और ग्रामवासी मिलकर करते हैं। आधुनिकता के इस दौर में भी यहां की रामलीला का ऐसा महत्व है कि रामलीला देखने व रोल निभाने के लिए बाहर रहने वाले युवा व नौकरीपेशा लोग भी गांव में आ जाते हैं। ये पेशेवर कलाकार नहीं पर रामलीला के संवाद और चैपाइयां तक जुबानी याद है।

राम का किरदार पन्ना लाल जाट एमए, हनुमान किशन जाट एमए, लक्ष्मण-डॉ सुभाष शर्मा एमबीए पीएचडी, आईटीआई कमलेश तेली रावण, एमकॉम हरीश शर्मा दशरथ, परमेश्वर जाट अहिरावण, सचिन त्रिपाठी एमबीए विष्णु, दिलखुश तिवारी कुम्भकरण, बीटेक विष्णु तिवारी मेघनाथ, रामलीला के निदेशक बालू जाट, वरिष्ठ लिपिक डिस्कॉम एवं निर्देशन देवकिशन जाट करते हैं।

शारदीय नवरात्र में सात दिन तक रोज रात 9 से 12 बजे तक हनुमानजी मंदिर प्रांगण में रामलीला मंचन होता है। गांव के अलावा आसपास के गांवों से भी लोग देखने आते हैं। उत्सव जैसा माहौल रहता है।

इस परंपरा से हर साल बच्चे भी रामायण जैसी धार्मिक व सांस्कृतिक धरोहर से रूबरू होते जाते हैं। उनके लिए कई प्रतियोगिताएं भी रखते हैं। इसके अलावा सामूहिक योगदान, व्यवस्थाओं में सहयोग और छुट्टियां लेकर गांव में आने से जुड़ाव मजबूत होता है।

प्रतिदिन अलग अलग कलाकार के घर से भोजन बन कर आता है। जातीय सद्भाव के साथ बगैर किसी भेदभाव के सभी एक साथ रामलीला के समापन के बाद प्रतिदिन साथ में भोजन करते हैं। पूर्व कलेक्टर रवि जैन, पूर्व पुलिस अधीक्षक राघवेंद्र सुहास, पूर्व पुलिस अधीक्षक प्रसन्नकुमार खमेसरा भी यहां की रामलीला को देखने आ चुके हैं। यहां की रामलीला मण्डल द्वारा ही इंदिरा गांधी स्टेडियम में आयोजित दशहरा मेला में रावण दहन किया जाता है।

महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. द्वारा उदयपुर में सीपीसीबी 4+ डीजल जेनरेटर की नई रेंज लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। महिंद्रा पावरोल अधिकृत जीओईएम तंवर इंडस्ट्रीज और डीलर राजस्थान डीजल सेल्स एवं सर्विस ने मंगलवार को उदयपुर के होटल द फर्न रेजीडेंसी में अपना बिल्कुल नया सीपीसीबी 4+ डीजल जेनसेट लॉन्च किया।

इस अवसर पर महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. के क्षेत्रीय प्रबंधक आलोक कुमार मौर्य, एरिया मैनेजर राजस्थान गौरव कुमार राय, एरिया मैनेजर एचकेवीए बिजनेस तारिक एम. खान, तंवर इंडस्ट्रीज, जयपुर के एम.डी. मोहम्मद ताहिर, बीडीएम सेल्स राजवीर सिंह तथा अधिकृत विक्रेता राजस्थान डीजल सेल्स एवं सर्विस के वाइस प्रेसिडेंट विजय बागरेचा उपस्थित थे।

आलोक कुमार मौर्य ने बताया कि सीपीसीबी 4+ जेनसेट 10 किलोवाट से 320 किलोवाट तक तंवर इंडस्ट्रीज के मांडा, जयपुर स्थित अत्याधुनिक प्लांट में निर्मित किए जाते हैं। इन इंजनों को चेन्नई में महिंद्रा रिसर्च वैली में इसके अनुसंधान एवं विकास केंद्र में डिजाइन किया गया है और पुणे और नागपुर में इसके संयंत्र में निर्मित किया गया है।

सीपीसीबी 4+ (10 किलोवाट-320 किलोवाट) की यह नई रेंज महिंद्रा पावरोल का नवीनतम संयोजन है जो पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा घोषित नवीनतम उत्सर्जन मानदंडों के अनुरूप है। ये जेनसेट तकनीकी रूप से उन्नत सीआरडीआई इंजन से सुसज्जित हैं।

मौर्य ने बताया कि सीपीसीबी 4+ मानदंडों का लक्ष्य नाइट्रोजन ऑक्साइड, पार्टिकुलेट मैटर और हाइड्रोकार्बन जैसे प्रदूषकों के उत्सर्जन को 90 प्रतिशत तक कम करना है। यह पर्यावरण के अनुकूल और स्वच्छ है। स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, उन्नत प्रौद्योगिकी है, ईंधन कुशल है और ग्राहकों के लिए लागत बचत है। महिंद्रा पावरोल डीजी सेट भारत में सबसे व्यापक सेवा नेटवर्क द्वारा समर्थित है। ग्राहक को तत्काल सहायता प्रदान करने के लिए नेटवर्क बहुत अच्छी तरह से सुसज्जित है। विशेषज्ञों की टीम ग्राहक को कम से कम समय में मदद करने के लिए सबसे इष्टतम और उपयुक्त समाधान चुनने में मदद कर सकती है। ग्राहकों को दिखाने के लिए उत्पाद उपलब्ध है।

नमस्ते उदयपुर

ARCHI
Group of Builders

Let's buy a home in
Archi's Premium Project.

ARCHI
PEARL PARADISE

3 & 4 BHK Luxury Apartment

MEERA NAGAR, SHOBHAGPURA, UDAIPUR

RERA Number : RAJ/P/2020/1233

POSSESSION SOON

ARCHI
THE ADDRESS

4 & 5 BHK Luxury Apartment

DPS ROAD, SHOBHAGPURA, UDAIPUR

RERA Number : RAJ/P/2023/2861

NEW LAUNCH

CORPORATE ADDRESS
Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road
Shobhagpura, Udaipur, Rajasthan - 313001.

www.archigroup.in
info@archigroup.in
archigroup_udaipur

7733-883-883

PARSHVA KALLA @9414165391

बाजार / समाचार

अशोक लेलैंड ने नई डीलरशिप शुरू की

उदयपुर (ह. सं.)। हिंदुजा समूह की प्रमुख कंपनी अशोक लेलैंड ने उदयपुर में लाइट कमर्शियल व्हीकल्स के लिए अपनी नई डीलरशिप नए चैनल पार्टनर तिरुपति ऑटोमोबाइल्स के साथ शुरु की। कंपनी के एलसीवी बिजनेस प्रमुख विप्लव शाह ने इसका शुभारंभ किया। शाह ने कहा राजस्थान में लाइट कमर्शियल व्हीकल्स की यह 6वीं डीलरशिप है। तिरुपति ऑटोमोबाइल्स के पास पांच प्रमुख स्थानों पर बिक्री, सेवा और स्पेयर्स की सुविधा है, जो उदयपुर के गोवर्धनविलास अहमदाबाद रोड पर स्थित है। यह सुविधा उन्नत उपकरणों तथा त्वरित सेवा बेस से सुसज्जित है। कंपनी दोस्त, बड़ा दोस्त, पार्टनर और मित्र रेंज में एलसीवी उत्पादों की एक श्रृंखला पेश करती है।

जोनल हैड अतुल श्रीर सागर ने बताया कि कंपनी 2011 में लाइट व्हीकल के क्षेत्र में उतरी और ग्राहकों के विश्वास पर खरी उतर कर लगातार मार्केट शेयर में नए झंडे गाढ़ रही है। रीजनल हैड अंकित गर्ग ने बताया कि कंपनी अपना इवी प्लांट भी शुरु करने जा रही है और सारी गाडियां रोबोटिक तकनीक पर बनाई जा रही है। इस अवसर पर कंपनी के अधिकृत डीलर तिरुपति ऑटोमोबाइल्स के पूर्व जिला प्रमुख केवलचंद लबाना, पार्टनर जयनारायण लबाना, प्रेमप्रकाश लबाना, हेमंत लबाना, जनरल मैनेजर अंकित पारीक, एरिया मैनेजर विपुल श्रीवास्तव, साउथ-वेस्ट के सर्विस मैनेजर अमित शर्मा, राजस्थान के एरिया सर्विस मैनेजर अभिषेक महापात्रा उपस्थित थे।

'टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर' लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। श्रीराम समूह की प्रमुख कंपनी श्रीराम फाइनेंस लि. ने 'टू-व्हीलर लोन पात्रता वाउचर' लॉन्च करने की घोषणा की, जो इस त्योहारी सीजन में अपने सपनों का टू-व्हीलर खरीदने के इच्छुक ग्राहकों के लिए एक अभिनव और अपनी तरह का पहला टू-व्हीलर लोन समाधान है।

श्रीराम फाइनेंस के एमडी व सीईओ वाई एस चक्रवर्ती ने कहा कि ग्राहक आमतौर पर अपनी पसंद की बाइक खरीदने के लिए रिसर्च करने और उस पर निर्णय लेने में काफी समय लगाते हैं। बहुत से लोग इस बात से अनजान हैं कि वे अपनी पसंद के टू-व्हीलर के लिए अपनी लोन पात्रता निर्धारित कर सकते हैं। टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर के जरिए ग्राहक आसानी से अपनी लोन पात्रता की जांच कर सकते हैं, जिससे उन्हें अपने सपनों का टू-व्हीलर खरीदने का भरोसा मिलता है और साथ ही फाइनेंसिंग की सुलभ उपलब्धता को लेकर आश्वस्त हो जाते हैं। टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर को ग्राहक की टू-व्हीलर लोन के लिए पात्रता, पात्रता राशि, ब्याज दर और लोन की अवधि जानने में लगने वाले समय को कम करने के इरादे से बनाया गया है। ग्राहकों श्रीराम फाइनेंस की वेबसाइट या श्रीराम वन ऐप पर जाकर जिस टू-व्हीलर को खरीदना चाहते हैं उसके बारे में सामान्य विवरण भरना होगा और कुछ ही क्षणों में उन्हें डाउन पेमेंट राशि तथा लोन पात्रता सहित लोन राशि का विवरण मिल जाएगा। इसके बाद उन्हें अपना टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर डाउनलोड करके उसे डीलरशिप पर श्रीराम फाइनेंस के प्रतिनिधि के सामने लोन आवेदन स्वीकृति के लिए आवश्यक दस्तावेजों के साथ प्रस्तुत करना होगा और यह प्रक्रिया आमतौर पर 10 मिनट के अंदर पूरी हो जाती है। लोन 24 घंटे में वितरित हो जाता है और ग्राहक अपने सपनों के टू-व्हीलर घर ले जा सकते हैं।

ट्रॉमा केयर पर विशेषज्ञों ने की चर्चा

उदयपुर (ह. सं.)। अपोलो हॉस्पिटल्स अहमदाबाद द्वारा अपोलो ट्रॉमा मास्टरक्लास 2024 का आयोजन किया गया, जिसमें ट्रॉमा केयर (देखभाल) के अग्रणी विशेषज्ञों ने ट्रॉमा प्रबंधन और आपातकालीन प्रतिक्रिया में सुधार के लिए अत्याधुनिक अभिगम जैसे गंभीर एवं महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा कर विचार साझा किए। अपोलो हॉस्पिटल्स के सीओओ नीरज लाल ने कहा कि कि समय पर उपचार, ट्रॉमा पीड़ितों के लिए जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर हो सकता है। यह महत्वपूर्ण और जरूरी है कि, सभी मेडिकल प्रोफेशनल्स जीवन बचाने के लिए कम समय में कार्य करने के लिए सुसज्जित हों। अपोलो ट्रॉमा मास्टरक्लास का उद्देश्य प्रतिभागियों के साथ ट्रॉमा देखभाल के बारे में नवीनतम जानकारी और दृष्टिकोण साझा करना था, जिससे जीवन बचाया जा सकें। अपोलो हॉस्पिटल्स के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. संजय शाह ने कहा कि ट्रॉमा केयर के लिए गोल्ड-स्टैंडर्ड प्रोटोकॉल का पालन करते हैं जिसमें एयरवे प्रोटेक्शन, तेजी से रक्तस्राव नियंत्रण, क्रिटिकल केविटि डिकम्प्रेशन (महत्वपूर्ण गुहा विसंपीड़न), फ्रेक्चर का शीघ्र स्थिरीकरण और महत्वपूर्ण अंगों की गहन निगरानी शामिल है। अपोलो ट्रॉमा मास्टरक्लास इन प्रथाओं को सुदृढ़ करने और विश्व स्तरीय ट्रॉमा केयर प्रदान करने में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। अपोलो हॉस्पिटल्स, के जॉइंट मेडिकल डिरेक्टर डॉ. पियाशा नाथ सेन ने कहा कि अपोलो हॉस्पिटल्स, में हम ट्रॉमा केयर के लिए व्यापक कनेक्टेड केयर सर्विस का पालन करते हैं। हमारे पास हमारे सुविधा केन्द्र में श्रेष्ठ ट्रॉमा सर्जन हैं, जो अत्याधुनिक प्रोसीजर (प्रक्रियाएं) कर सकते हैं।

सचिन बैंक ऑफ़ बड़ौदा के ब्रांड एंबेसडर बने

उदयपुर (ह. स.)। बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने क्रिकेट के दिग्गज सचिन तेंदुलकर को बैंक के वैश्विक ब्रांड एंबेसडर के रूप में अनुबंधित किए जाने की घोषणा की।

सचिन तेंदुलकर और बैंक ऑफ़ बड़ौदा के बीच यह साझेदारी बैंक के उत्कृष्टता और विश्वास जैसे बुनियादी मूल्यों पर आधारित है। बैंक ऑफ़ बड़ौदा सचिन के साथ मिलकर अपने पहले अभियान 'प्ले द मास्टरस्ट्रोक' की शुरूआत कर रहा है।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के प्रबंध निदेशक देबदत्त चांद ने कहा कि सचिन एक वैश्विक आइकन हैं जिन्होंने हमेशा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने खेल से हमें प्रेरित किया है जिस तरह उन्होंने अपने बेहतरीन कॅरियर के माध्यम से एक समूचे राष्ट्र को प्रेरित किया है, उसी तरह बैंक ऑफ़ बड़ौदा देश भर में करोड़ों लोगों के लिए एक विश्वसनीय साझेदार रहा है। इस अवसर पर 'बॉब मास्टर स्ट्रोक बचत खाता' के शुरुआत की घोषणा की गई। सचिन तेंदुलकर ने कहा कि मुझे बैंक ऑफ़ बड़ौदा, के साथ जुड़ते हुए खुशी है। बैंक ऑफ़ बड़ौदा आज उत्कृष्टता, सत्यनिष्ठा, नवोन्मेषिता के सिद्धांतों पर चलते हुए एक अग्रणी बैंकिंग संस्थान बन गया है।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने मन मोहा

उदयपुर (ह.सं)। चित्रकूट युवा संगठन की ओर से गोकुल पार्क में दशहरा महोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि रूचिका श्रीमाली थी। संगठन के अजय दवे ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना से हुई। छह साल की लविशा राठौड़ ने 'राम आयेंगे तो अंगना सजाऊंगी', सलोनी सिसोदिया ने 'टूटे बाजूबंद की लोर' गीत पर राजस्थानी डांस की प्रस्तुति दी।

इस दौरान लॉटरी निकाली गई जिसमें एलईडी टीवी का पहला ईनाम साक्षी के नाम निकला। इस अवसर पर रोहित जोशी, नरेंद्र श्रीमाली, मांगीलाल सुथार, कुलदीपसिंह, ललितसिंह सिसोदिया, कुंदनसिंह कच्छेर, प्रकाश प्रजापत, संदीप जोशी, शिवकुमार शर्मा, लोकेश मेनारिया, केशु शर्मा, सागर पालीवाल आदि उपस्थित थे।

डेटा पर निर्भर करेगी भविष्य की दर कार्यवाही: अभीक बरूआ

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक के चीफ इकोनोमिस्ट अभीक बरूआ ने कहा है कि भविष्य की दर कार्यवाही डेटा पर निर्भर करेगी। तीन दिन से चल रही मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी (एमपीसी) की मीटिंग में लिये गये फैसलों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बरूआ ने कहा कि आरबीआई ने अपनी रूख को तटस्थ रखते हुए अपनी नीति दर को 6.5 प्रतिशत पर बरकरार रखा है, हालांकि आज की नीति घोषणा ने घरेलू विकास पर अधिक ध्यान केन्द्रीत करते हुए केवल अंतर वैश्विक मौद्रिक नीति कार्यवाइयों का एक परीधीय उल्लेख किया।

आरबीआई ने घरेलू एवं वैश्विक जोखिमों को उजागर करते हुए टिकाऊ अवस्फीतिकारी रूझान को स्वीकार किया और संकेत दिया कि भविष्य की दर कार्रवाई डेटा पर निर्भर होगी। इसे देखते हुए, यदि आने वाले महीनों में स्थितियाँ अनुकूल होती हैं, तो दिसंबर में दर में कटौती की संभावना नहीं है। आज की नीति घोषणा ने मौद्रिक नीति निर्णय लेने में घरेलू परिस्थितियों की केंद्रीयता पर जोर दिया।

हाल के दिनों में कई जी7 केंद्रीय बैंकों द्वारा दरों में कटौती के बाद, बाजार के कुछ वर्गों ने अनुमान लगाया था कि यह प्रतिक्रिया को ट्रिगर कर सकता है और घरेलू दर निर्णयों को भी प्रभावित कर सकता है।

डॉ. दीपक लिंबाचिया द्वारा एंडोमेट्रियोसिस सर्जरी आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। महिलाओं के स्वास्थ्य सेवा के लिए एक अग्रणी केन्द्र, ईवा विमेन्स हॉस्पिटल ने अहमदाबाद में दो दिनों में 17 जटिल एंडोमेट्रियोसिस सर्जरी की। ये सर्जरी प्रसिद्ध महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. दीपक लिंबाचिया द्वारा एंडोमेट्रियोसिस सर्जरी पर एक हेन्ड्स ओन ट्रेनिंग के रूप में की गई। यह दुनिया का पहला आधिकारिक रूप से घोषित हेन्ड्स ओन एंडोमेट्रियोसिस ट्रेनिंग कार्यक्रम था। इनमें चार रिसेक्शन और एनास्टोमोसिस

प्रोसिजर्स, एंडोमेट्रियोसिस मामले में एक मूत्रवाहिनी का रीपेर और 12 डीप इन्फिल्ट्रेटिंग एंडोमेट्रियोसिस सर्जरी शामिल थीं। इस वर्कशोप का उद्देश्य आंत्र शोधन और एनास्टोमोसिस के साथ ग्रेड 4 एंडोमेट्रियोसिस सर्जरी के बारे में प्रशिक्षण देना था। डॉ. लिंबाचिया ने कहा कि सभी रोगियों को छुट्टी दे दी गई है और वे बहुत अच्छा महसूस कर रहे हैं। वर्कशोप में 4 डॉक्टरों ने भाग लिया जिनमें एक विदेश से तथा अन्य भारत के विभिन्न हिस्सों से जुड़े थे। कार्यक्रम का लक्ष्य विभिन्न स्थानों के सर्जनों को आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके एंडोमेट्रियोसिस पर ऑपरेशन करने के कौशल से लैस करना था।

भारत में खेलों में सुगम्यता को बढ़ावा दे रहा है स्वयं

उदयपुर (ह. सं.)। स्मिनू जिंदल चैरिटेबल ट्रस्ट की एक गैर-लाभकारी पहल स्वयं ने दूसरी बार भारत के डिसेबिलिटी क्रिकेट काउंसिल ऑफ इंडिया (डीसीसीआई) के साथ चौथे नेशनल डिसेबिलिटी टी 20 टूर्नामेंट के लिए हाथ मिलाया है। यह स्वयं की डीसीसीआई के साथ पांचवीं साझेदारी है जो खेलों में सुगम्यता को बढ़ाने के लिए है। स्वयं की संस्थापक-अध्यक्ष सुश्री स्मिनू जिंदल ने कहा कि टूर्नामेंट 25 अक्टूबर तक उदयपुर में आयोजित हो रहा है। इसमेंअ 24 राज्यों के 400 दिव्यांग क्रिकेटरों की भागीदारी होगी। 67 मैच फील्ड क्लब, बीएन यूनिवर्सिटी ग्राउंड, गीतांजली ग्राउंड, नारायण पैरा स्पोर्ट्स एकेडमी और करणपुर क्रिकेट ग्राउंड पर खेले जाएंगे। पिछले साल आयोजित चैम्पियनशिप में, स्वयं ने 63 खिलाड़ियों को मैन ऑफ द मैच के तहत प्रत्येक को 11,000 रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया था। इस वर्ष भी स्वयं 67 खिलाड़ियों को मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार देकर सम्मानित करेगा।

दिव्यांग क्रिकेट काउंसिल ऑफ इंडिया के महासचिव रविकांत चौहान ने कहा कि हम स्वयं के साथ अपनी लंबे समय से चली आ रही साझेदारी को जारी रखने पर गर्व महसूस कर रहे हैं, जो कई वर्षों से डीसीसीआई का समर्थन कर रहा है।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का आयोजन किया गया। इस साल का विषय था 'कामकाजी जगह पर मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना जरूरी है।' इस कार्यक्रम में मेडिकल और पैरामेडिकल के छात्र, शिक्षक और अन्य लोग शामिल हुए। कार्यक्रम में प्रोफेसर प्रवीन खेरकर ने बताया कि कार्यस्थल पर खुद से ज्यादा पसंद करने वाले लोगों से कैसे निपटा जा सकता है। डॉ. आर्चिष खिवसारा ने छात्रों और कामकाजी संस्कृति में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर चर्चा

की और बेहतर वातावरण बनाने के सुझाव दिए।

कुलपति डॉ. प्रशांत नाहर, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डॉ. सरिता कांत, और मेडिकल लैब के निदेशक डॉ. चंद्र माथुर ने विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों में विजेताओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ. नाहर ने कहा कि कामकाजी जगह पर लचीलापन, सम्मान और विकास की सही सोच बहुत जरूरी है। उन्होंने सभी को एक-दूसरे की मदद करने वाली टीम बनाने के लिए प्रेरित किया, ताकि मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सके। यह कार्यक्रम इस बात की याद दिलाता है कि मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखना जरूरी है। हमें एक-दूसरे का समर्थन करने वाली संस्कृति बनानी चाहिए, ताकि हम सभी एक बेहतर और सफल भविष्य की ओर बढ़ सकें।

एसपीएसयू में 2024 में रिकॉर्ड एडमिशन, न्यू एज पाठ्यक्रमों की शुरुआत अगले सत्र से

उदयपुर (ह. सं.)। सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय, उदयपुर अकादमिक नवाचार, उद्योग सहयोग और छात्र विकास में सबसे आगे रहने के अपने चल रहे प्रयासों में एक विश्वस्तरीय शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्पित है। प्रेसवार्ता में कुलपति और अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) पृथ्वी यादव ने अकादमिक उत्कृष्टता, उद्योग की तत्परता और छात्रों की सफलता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उल्लेखनीय उपलब्धियों और रोमांचक नई पहलों वाले एक वर्ष की घोषणा की। इस अवसर पर रजिस्ट्रार डॉ. उदय प्रकाश सिंह, एडमिशन डायरेक्टर संजीव कुमार तथा फेकल्टी ऑफ मैनेजमेंट डीन डॉ. सदानंदा पुष्टी भी उपस्थित थे।

प्रो. यादव ने बताया कि एसपीएसयू में इस वर्ष 800 से अधिक छात्रों ने विभिन्न कार्यक्रमों में दाखिला लिया है। गौरतलब है कि इस साल नियमित और पीएचडी पाठ्यक्रमों के लिए अंतरराष्ट्रीय छात्रों ने भी दाखिला लिया है। प्रवेश में यह वृद्धि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय की बढ़ती प्रतिष्ठा और भविष्य के मार्गदर्शकों को संवारने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

प्रो. यादव ने बताया कि उद्योग भागीदारी पर विश्वविद्यालय के मजबूत फोकस के कारण सभी विभागों में उद्योग-उन्मुख पाठ्यक्रमों की शुरुआत हुई है। ये पाठ्यक्रम आज के तेजी से विकसित हो रहे नौकरी बाजार की मांगों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, जो छात्रों को व्यावहारिक कौशल और ज्ञान प्रदान करते हैं। एसपीएसयू रैंकिंग, मान्यता और अकादमिक उत्कृष्टता के लिए अंतरराष्ट्रीय क्यूएस 1 - गेज के साथ सहयोग करने में अग्रणी है। विश्वविद्यालय ने ज़ेबिया, लार्सन एंड टुब्रो (एल एंड टी), एसएस, एफएल

स्मिथ, और जेके सीमेंट जैसे उद्योग नेताओं के साथ सहयोग किया है ।

प्रो. यादव ने बताया कि एसपीएसयू 2025-26 के शैक्षणिक वर्ष के लिए कई नवाचारपूर्ण कार्यक्रमों की शुरुआत की घोषणा की ,जो एक विकसित हो रहे वैश्विक कार्यबल की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इनमें बी. डिज़ाइन (फैशन डिज़ाइन) : फैशन में रचनात्मकता और नवाचार पर ध्यान केंद्रित। परफॉर्मिंग आर्ट्स और कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन में विशेषज्ञता के साथ बीबीए इन लिबरल आर्ट्स : कला और व्यवसाय संचार कौशल का अद्वितीय कोर्स। बीबीए, एलएलबी : 5 साल का एकीकृत कानून कोर्स। बीबीए स्पोर्ट्स मैनेजमेंट : व्यवसाय और खेल उद्योग विशेषज्ञता का एक गतिशील कोर्स। एमबीए टेक : प्रबंधन और प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने वाला 5 साल का कोर्स। बीबीए एनालिटिक्स और एमबीए डेटा साइंस : डेटा विज्ञान और एनालिटिक्स पर केंद्रित उन्नत डिग्री। बी. टेक इन पेंट टेक्नोलॉजी: पेंट और कोटिंग्स उद्योग में करियर के लिए छात्रों को तैयार करने वाला एक विशेष कोर्स शामिल हैं।

एसपीएसयू शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए अपने विशेष उत्कृष्टता केंद्रों के माध्यम से समर्पित है। ये केंद्र अनुसंधान, उद्योग साझेदारी, और व्यावहारिक शिक्षा के प्रमुख केंद्रों के रूप में कार्य करते हुए, तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्रों में छात्रों को श्रेष्ठता प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग (एआईएमएल), साइबर सुरक्षा, रोबोटिक्स, सेमीकंडक्टर और आईओटी, पर्यावरण विज्ञान और स्थिरता, व्यवसाय विश्लेषण, फिनटेक और ब्लॉकचेन। विश्वविद्यालय एक डिज़ाइन लैब भी स्थापित कर रहा है, जो डिज़ाइन थिंकिंग और नवाचार में रचनात्मकता और अंतरविषयक सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

11वां दीक्षांत समारोह 8 नवंबर को :

एसपीएसयू का 11वां दीक्षांत समारोह 8 नवंबर 2024 को आयोजित किया जाएगा। इस महत्वपूर्ण अवसर पर यूजीसी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. वेद प्रकाश मुख्य अतिथि होंगे। इस कार्यक्रम में स्नातक छात्रों की उपलब्धियों को सम्मानित किया जाएगा और विश्वविद्यालय की विरासत में उनके योगदान को उजागर किया जाएगा। यह महत्वपूर्ण अवसर शैक्षणिक उत्कृष्टता का जश्न मनाने और अगली पीढ़ी के एसपीएसयू पूर्व छात्रों को प्रेरित करने के लिए भी एक मंच के रूप में कार्य करेगा।

समग्र विकास, नवाचार, और उद्योग एकीकरण पर जोर देते हुए, एसपीएसयू भविष्य के निर्माताओं को सशक्त बना रहा है, ताकि वे तेजी से बदलती दुनिया की चुनौतियों का सामना करने में समर्थ हो सकें।

कठपुतली कहां से.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

एकदिन सामरजी और मैंने नाथू भाट का शुरू से आखिरी तक पूरा खेल देखा। सामरजी ने नाथू को बताया कि आनेवाले समय में यह खेल जिन्दा रहे, इसके लिए इसमें थोड़ा बहुत बदलाव करना पड़ेगा नहीं तो कोई देखने वाला नहीं होगा और तुम लोगों की रोजगार की समस्या बढ़ जायेगी। नाथू ने जवाब में बताया, 'हमारी बिरादरी में अब कोई कठपुतली नचाने वाला नहीं रहा। सबने यह धंधा छोड़ दिया है। मेरा भी परिवार कई बार मुझे इसे छोड़ने को कह चुका है कारण कि इससे अब हमारी पेट भराई नहीं होती है फिर हमारे बाप-दादाओं ने जो हमें पुतली चलाना सिखाया हम उसमें जरा भी बदलाव नहीं करना चाहेंगे। इससे हमारी जोगमाया हमसे रूठ जायेगी और हमारा अनिष्ट कर देगी।'

यह सुन सामरजी गहन सोच में पड़ गये। दूसरे ही दिन उन्होंने मुझसे कहा, भानावतजी नाथू तो इसमें कुछ भी बदलाव करने वाला नहीं है पर हमें इस भूलीबिसरी महत्त्वपूर्ण कलाविधा को मरणासन्न स्थिति में भी नहीं देखना है सो अपने ही कलाकारों द्वारा कुछ अच्छे परिवर्तन के साथ अमरसिंह राठौड़ की तर्ज पर 'मुगल दरबार' नाम से नई पुतली रचना का मानस बनाते कलाकारों के पहनने की पूरी काली पोशाक बनवाई। दर्जी भगवानजी पोशाकें बनाने में निष्णात थे। कठपुतली बनाने वाले भी बसी गांव के पारम्परिक खेरादी मांगीलाल, रामचन्द्र थे जिनसे अच्छी कठपुतलियां बनवाई। गाने वाली परम्परागत मधुर गायिकाएं नारायणीबाई, जानकीबाई थीं और कलाकारों में प्रमुख दयाराम, तोलाराम, लालूराम तथा शकुंतलादेवी थीं जो तब तक देश के प्रत्येक क्षेत्र तथा विदेश तक में अपनी प्रस्तुतियों से पर्याप्त ख्याति अर्जित कर चुके थे।

उन्हीं दिनों खबर मिली कि रूमानिया की राजधानी बुखारेस्ट में तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह होने जा रहा है। सामरजी को यह सुअवसर हाथ लगा कि इस समारोह में कलामण्डल का कठपुतली दल भी भारत की ओर से प्रतिनिधि के रूप में भाग ले। हमने संस्कृति मंत्री हुमायू कबीर को एक अच्छा-सा पत्र लिखा जिसमें भारतीय पुतलीकला के महत्त्व के साथ कलामण्डल द्वारा किये गये पुतली प्रदर्शन का विस्तृत हवाला देते रूमानिया में हमारे दल को भेजने का आग्रह किया। इसके लिए स्वयं सामरजी ने दिल्ली जा कबीर साहब से व्यक्तिश: भेंट की थी पर उन्होंने यह कहकर इंकार कर दिया कि भारत इस समय इस कला में बहुत पिछड़ा हुआ है। यहां तक कि कठपुतली नचाने वालों का अपने परिवार का भरण पोषण करना भी कठिन हो गया है।

सामरजी तब भी निराश नहीं हुए और प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को लिखा कि हमने जो कुछ प्रयोग किया है उसकी प्रस्तुति केवल आध घंटे के लिए आप के निजी आवास पर देना चाहेंगे। शास्त्रीजी ने सामरजी की उस मर्मभरी चिट्ठी को बड़ी गम्भीरता से लिया। लिहाजा सामरजी ने अपने कठपुतली दल के साथ शास्त्रीजी के परिजन तथा सम्बन्धित मंत्रालय के अधिकारियों के समक्ष खेल की प्रस्तुति दी। इसका असर बड़ा गहरा पड़ा। शास्त्रीजी ने सामरजी की इस प्रस्तुति के लिए बड़ी बधाई दी और केवल चार व्यक्तियों को बुखारेस्ट भेजने की स्वीकृति प्रदान की। इससे पूर्व 18 अक्टूबर 1958 को नागौर में पंचायती राज का उद्घाटन करने के बाद पं. नेहरू ने 'मुगल दरबार' देख इस क्षेत्र में काम करने की उत्कर्षजनित प्रेरणा ही नहीं दी अपितु लिखा भी कि अभी हाल ही में मैंने नागौर में कलामण्डल का प्रदर्शन देखा और बहुत पसंद किया।

सन् 1965 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में 33 राष्ट्रों के 55 पुतली विशेषज्ञ दलों ने भाग लिया। सामरजी ने बताया कि एक-एक ट्रक पुतलियों से लदा सामान और तीस से चालीस कलाकारों की प्रस्तुति देखकर हमारे हौंसले खट्टे हो गये। उनके सामने हमारी मात्र 32 पुतलियों का पिटारा कोई अर्थ नहीं रखता था। हम शर्म से गढ़े जा रहे थे पर हमारे कलाकारों ने भी पूरी दुनियां देख रखी थी। प्रस्तुति के दौरान वे भूल गये कि इन कलाकारों के समक्ष हम नितांत बौने हैं और दिल खोलकर प्रस्तुति दी मगर पुरस्कार की उम्मीद करना तो मूर्खता की चरम सीमा थी लेकिन भाग्य को कौन पढ़ पाया है। जब पुरस्कार घोषित हुए तो भारत को प्रथम पुरस्कार मिला जिससे सामरजी स्वयं हक्केबक्के हो गये और वहां उपस्थित कलाकारों में किसी ने गोदी में तो किसी ने कंधे पर बिठाकर जो उल्लास व्यक्त किया वह स्वप्नातीत कल्पनातीत था। उस एक ही रात में भारत की परम्पराशील पुतली कला पूरे विश्व की आंखों में तैर गई।

नाथू भाट के कठपुतली खेल से प्रेरणा लेकर सामरजी ने कलामण्डल में पहलीबार 1959 में अखिल भारतीय कठपुतली समारोह आयोजित किया। उसकी सफलता देख 1964 में दूसरा और फिर 1976-77 में दोनों वर्ष राजस्थानव्यापी बाल कठपुतली समारोह आयोजित किया। फिर तो राजस्थान के शिक्षा विभाग ने स्कूलों के अध्यापकों को भी हमारे यहां कठपुतली प्रशिक्षण के लिए भेजा। स्वयं सामरजी ने कठपुतली कला और परम्परा, कठपुतली कला और शिक्षा, कठपुतलियां और मानसिक रोगोपचार जैसी पुस्तकें लिखीं। विदेश से लौटने पर भारत सरकार ने भी उनसे एक पुस्तक लिखवाई जिसमें पूरे विश्व में पुतलियों द्वारा हो रहे प्रयोगों की रोचक जानकारी दी गई थी।

यही नहीं, जब मैं कलामण्डल का निदेशक था तब 1986 में यूनिसेफ द्वारा 'मातृ एवं शिशु कल्याण' कार्यक्रम के अन्तर्गत हमें पुतली नाटिकाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यक्रम दिखाने का काम मिला। इस योजना में 28 विषयों यथा शादी की उम्र से लेकर वर्ष भर के बच्चे से सम्बन्धित नाटिकाओं के प्रदर्शन देने थे।

हमारे कलाकारों ने उदयपुर तथा पास के बांसवाड़ा तथा डूंगरपुर जिलों के 40 गांवों में प्रदर्शन दिये। ये गांव अधिकतर जनजाति समुदाय के हैं। कुल पांच चरणों में पांच नाटिकाएं (1) सुनो सबकी (2) झूमकी का सपना (3) नया मेहमान (4) वामन अवतार तथा (5) सोने की भस्म नाटिकाएं मंचित की गईं। इस सम्बन्धी 1958 में 'कठपुतली नाटिकाएं' नाम से पुस्तक प्रकाशित की गई जिसमें इस सम्बन्धी समग्र जानकारी तथा नाटिकाएं दी गई हैं।

प्रख्यात कलाविज्ञ श्री जगदीशचन्द्र माथुर जब ऑल इण्डिया रेडियो के डायरेक्टर जनरल थे तब उन्होंने कठपुतली नाटक की रचना कर राजस्थान के प्रसिद्ध पुतली नर्तक सागर भाट से उसकी प्रस्तुति करवा सभी आकाशवाणी केन्द्रों से उसका प्रसारण करवाया था। 25 फरवरी 1978 को कलामण्डल के रजत जयंती समारोह के अन्तर्गत हमने एक अखिल भारतीय लोककला संगोष्ठी का आयोजन किया जिसका उद्घाटन केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी की अध्यक्षा श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने की तथा अध्यक्षता श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने की थी।

उसी दौरान बातचीत में माथुर साहब ने मुझे बताया कि आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित वह कठपुतली नाटिका 'गगन सवारी' थी जिसका श्रोताओं की मांग पर कोई हजार बार प्रसारण किया गया। अनेक श्रोताओं ने बार-बार पूछा कि इस नाटिका का लेखक कौन है परन्तु किसी को नहीं बताया गया कि यह नाटिका मैंने स्वयं ने लिखी है। सागर भाट वह पहला कलाकारा था जो राजस्थान से आकर यहां झुग्गी झोंपड़ियों में अन्य कलाकारों के साथ बस गया। उसे और कुछ नहीं चाहकर बस पीने को एक बोतल शराब और उसकी पत्नी को पहनने को लुगड़ी; लेकिन सागर भाट की जब उंगलियां चलतीं तो पूरी कठपुतली ही नहीं, पूरा वातावरण ही थिरक पड़ता और उसकी पत्नी के मधुर कण्ठ से जो स्वर निकलता, 'वाह! क्या कमाल का था।'

यहां मैं पुतलीपाल अजयपॉल का उल्लेख करना आवश्यक समझ रहा हूं जिन्होंने अनेक वर्षों तक कलामण्डल के कठपुतली विभाग में रहकर कठपुतलियों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण में महत्त्वपूर्ण योग दिया। बाद में उन्होंने अपना स्वयं का कम्यूनिटी सेन्टर प्रारम्भ किया। उनकी यह खासी विशेषता थी कि वे अकेले स्वयं चार पुतलियों की बड़ी दक्षता से प्रस्तुति देकर दर्शकों को बांधे रखते थे। वे स्वयं अच्छे पुतली नाटक लेखक थे। उन्होंने विविध शैली की पुतलियों को बड़े चाव और चाह से देखा, परखा तथा प्रस्तुति दी है।

कलामण्डल में लोकनृत्यों के बाद कठपुतली प्रदर्शनों से दर्शकों का बड़ा मनोविनोद किया जाता। हमारी ये नाटिकाएं पूरे देश में प्रशंसित हुई। सहारनपुर के एक कॉलेज में जब हमारा दल गया तो प्रिंसिपल को बताया गया कि अन्य पुतलियों के साथ 'हड़ताल' नामक कठपुतली का नाटक दिखाया जायेगा। इस पर प्रिंसिपल ने हाथ जोड़ते कहा कि कृपया हड़ताल का प्रदर्शन भूलकर भी न करें कारण कि हमारे यहां के छात्र आये दिन 'हड़ताल' करने को उतारू हो जाते हैं। इस पर पॉल ने कहा कि आप देखकर हमें शाबाशी देंगे और हमारी गारंटी है कि इसके प्रदर्शन के बाद आपके यहां कभी कोई छात्र 'हड़ताल' नहीं करेगा। प्रिंसिपल साहब कलामण्डल के ख्यातिलब्ध प्रदर्शनों से सुपरिचित थे। वे कुछ नहीं बोले पर उनके मन में दगदगा जरूर था लेकिन उस प्रदर्शन से जो असर पड़ा उसका सेहरा प्रिंसिपल साहब के सिर पर ऐसा बंधा कि फिर कभी उस कॉलेज में हड़ताल नहीं हुई। ऐसी चिट्ठी उन्होंने सामरजी को लिखी थी जिसे मैं भी पढ़ पाया।

हां तो वह 'हड़ताल' नाटिका भी अजयपॉल द्वारा ही लिखी गई और मंचन भी उन्हीं ने अपने साथियों के साथ किया। सामरजी ने मुझे बताया कि हड़ताल के कम-से-कम एक हजार प्रदर्शन कलामण्डल के कलाकारों द्वारा दिये गये। इसी तरह पॉल की लिखी बी.ए. पास बीबी, हमारा मुन्ना, गांव की गोरी नाटिकाओं को दर्शकों की भरपूर सराहना मिली।

अजयपॉल ने इन सभी नाटिकाओं तथा कठपुतली निर्माण की प्रक्रिया और विविध शैलियों को लेकर सरल पुतली कला नाम से एक पुस्तिका का भी प्रकाशन जनवरी 1980 में किया। इसकी एक पृष्ठीय प्रस्तावना लिखने का श्रेय भी उन्होंने मुझे दिया।

भारतीय लोककला मण्डल ने कठपुतली के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रयोग तो धागा पुतलियों को लेकर ही किया जिसे सूत्र संचालित शैली कहा जाता है लेकिन हथेली में पहनकर जो पुतली संचालित की जाती है उसकी भी अपनी विशिष्ट शैली रही है जो कठपुतली भाट अपने बच्चे को पुतली चलाने का अभ्यास करते समय पांचों अंगुलियों में बीच की बड़ी अंगुली में कठपुतली का धड़, उसके पास की अंगुलियों में हाथ तथा दोनों ओर की आखिरी अंगुलियों में पांव; इस प्रकार पांचों काठ की बनी आकृतियों वाली पुतलियां पहनाकर जो अभ्यास कराया जाता है लगता है जैसे अत्यन्त छोटा बच्चा, ललुआ अपने हाथ-पांव चला मुस्कान मार रहा है। हमने इसे 'ललुआ' नामक शैली विशेष से सम्बोधित किया है।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

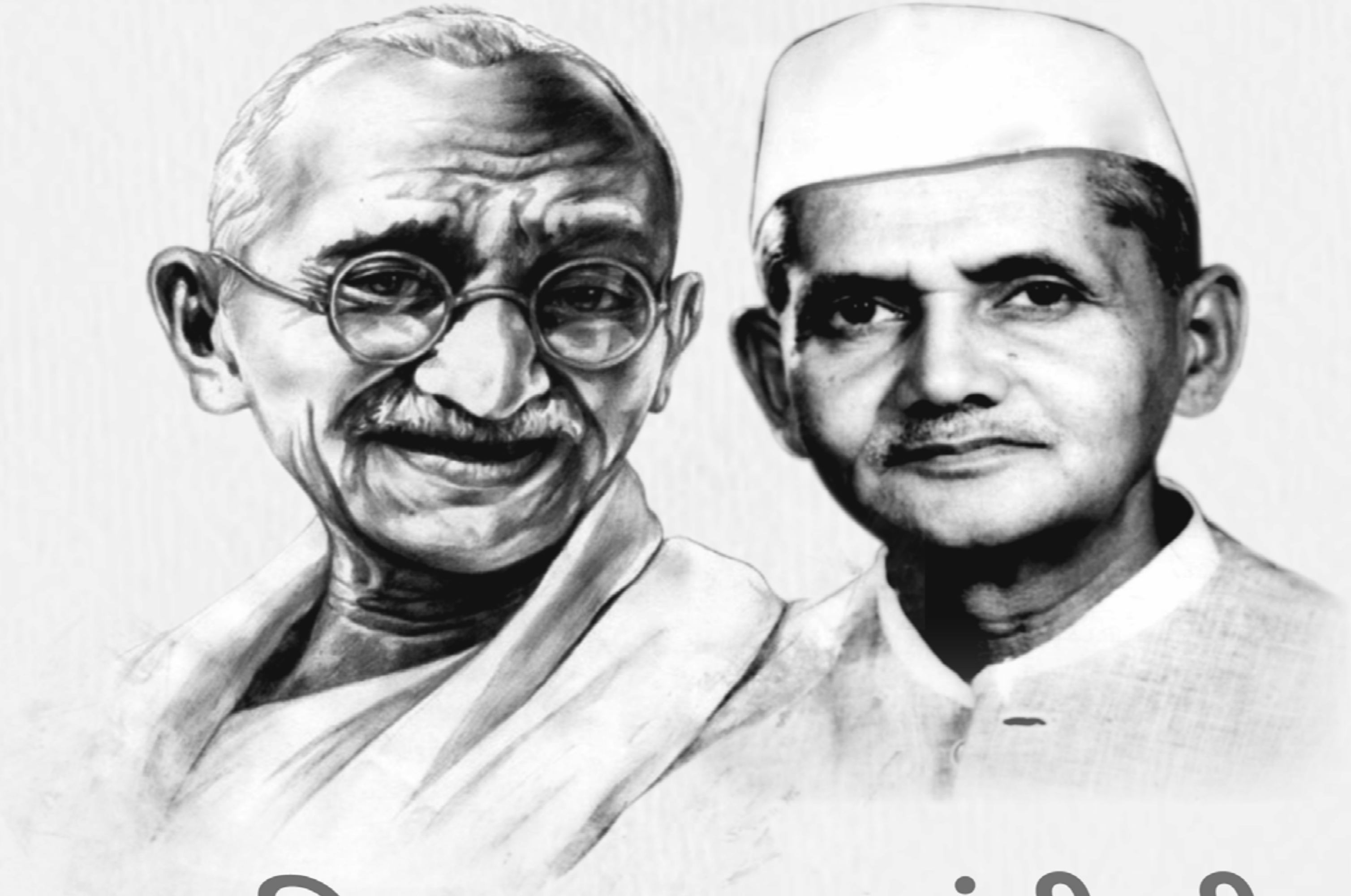

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी

व पूर्व प्रधानमंत्री

लाल बहादुर शास्त्री जी

की जयंती पर शत्-शत् नमन

2 अक्टूबर 2024

राजस्थान संवाद

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

"महात्मा गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी का सम्पूर्ण जीवन केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रेरणा का एक अनंत स्रोत है। उनकी सादगी, समर्पण और सेवा की भावना ने हमें नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा की सच्ची परिभाषा दी है। गांधीजी का मानना था कि स्वच्छता ही सेवा है। यह विचार हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के स्वच्छ भारत अभियान का आधार है। दोनों महापुरुषों को उनकी जयंती पर प्रदेश की ओर से भावपूर्ण नमन।"

भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री

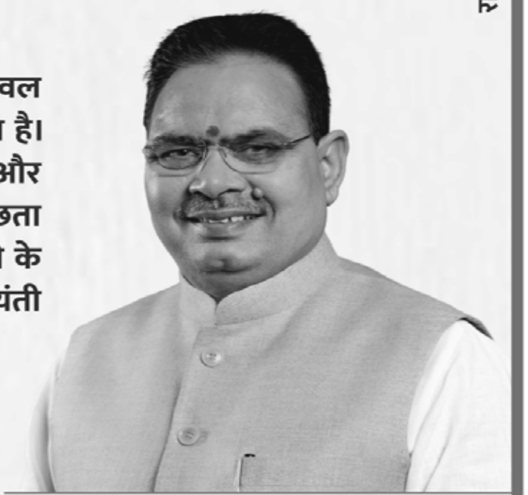

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।